Quadrant II- Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (First Year)

Subject: Hindi (AECC)

Paper Code: HNA 101

Paper Title: Sampreshan Kaushal

Unit: Hindi Vyakaran

Module Name: Swar- Vyanjan: Vargikaran

Module No: 01

Name of the Presenter: DR. Jenet Philip Borges

स्वर व्यंजन – वर्गीकरण

हिंदी वर्णमाला

वर्णविचार व्याकरण के उस भाग को कहते हैं, जिसमें वर्णों के आकार, भेद, उच्चारण तथा उनके मेल से शब्द बनाने के नियमों का निरुपण होता है।

वर्णो के समुदाय को वर्णमाला कहते हैं।

हिंदी वर्णमाला में ४३ वर्ण हैं।

हिंदी वर्णमाला के दो भेद हैं-

१. स्वर २. व्यंजन

वर्णमाला

|---------------------------------|

स्वर व्यंजन

१. स्वर

- स्वर उन वर्णो को कहते है जिनका उच्चारण स्वतंत्रता से होता है और जो व्यंजनों के उच्चारण में सहायक होते है।

- हिंदी में ११ स्वर है।

- अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

- अं- अनुनासिक्य

- अः - विसर्ग

उत्पत्ति के अनुसार स्वरों के दो भेद है।

१. मूल स्वर

२. संधि स्वर

१. मूल स्वर- जिन स्वरों की उत्पत्ति किन्हीं दूसरे स्वरों से नहीं है, उन्हें मूल स्वर (वा ह्रस्व) कहते हैं। वे चार हैं- अ, इ, उ और ऋ।

२. संधि स्वर- मूल स्वरों के मेल से बने हुए स्वर संधि स्वर कहलाते हैं।

जैसे – आ, ई, ए, ऐ, ओ, औ।

- संधि स्वरों के दो भेद हैं-

१. दीर्घ २. संयुक्त

अ) दीर्घ- किसी एक मूल स्वर में उसी मूल स्वर के मिलाने से जो स्वर उत्पन्न होता है, उसे दीर्घ स्वर कहते हैं। जैसे- अ + अ = आ, इ + इ = ई, उ + उ = ऊ, अर्थात आ, ई, ऊ दीर्घ स्वर हैं।

आ) संयुक्त- भिन्न-भिन्न स्वरों के मेल से जो स्वर उत्पन्न होता है, उसे संयुक्त स्वर कहते हैं।

जैसे- अ + इ = ए, अ + उ = ओ, आ + ए = ऐ, आ + ओ = औ

उच्चारण के कालमान के अनुसार स्वरों के दो भेद किए जाते हैं – लघु और गुरू।

उच्चारण के कालमान को मात्रा कहते हैं।

अ) लघु स्वर- जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा लगती है उसे लघु स्वर कहते हैं।

जैसे- अ, इ, उ, ऋ।

आ) गुरु स्वर- जिस स्वर के उच्चारण में दो मात्राएँ लगती हैं उसे गुरु स्वर कहते हैं।

जैसे- आ, ई, ए, ऐ, ओ, औ।

सब मूल स्वर लघु और सब संधि स्वर गुरु हैं।

२. व्यंजन

- व्यंजन उन वर्णों को कहते है, जो स्वर की सहायता के बिना नहीं बोले जा सकते।

- हिंदी में ३३ व्यंजन है।

क ख ग घ ङ.

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व श ष स ह

क्ष ज्ञ त्र श्र (सयुंक्ताक्षर)

ड़ ढ़ (व्दिगुण व्यंजन)

वर्णों का उच्चारण और वर्गीकरण

- मुख के जिस भाग से जिस अक्षर का उच्चारण होता है, उसे उस अक्षर का स्थान कहते हैं।

- स्थान के भेद से वर्णों के निम्न वर्ग होते है-

कंठ्य- जिनका उच्चारण कंठ से होता है, जैसे-अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ., ह और विसर्ग।

तालव्य- जिनका उच्चारण तालु से होता है, जैसे- इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, और श।

मूर्धन्य- जिनका उच्चारण मूर्धा से होता है, जैसे- ट, ठ, ड, ढ, ण, र, और ष।

दंत्य- जिनका उच्चारण ऊपर के दाँतों पर जीभ लगाने से होता है, जैसे- त, थ, द, ध, न, ल, और स।

ओष्ठ्य- जिनका उच्चारण ओठों से होता है, जैसे- उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म।

अनुनासिक- जिनका उच्चारण मुख और नासिका से होता है, जैसे- ङ., ञ, ण, न, म, और अनुस्वार।

कंठतालव्य- जिनका उच्चारण कंठ और तालु से होता है, जैसे- ए, ऐ।

कंठोष्ठ्य- जिनका उच्चारण कंठ और ओठों से होता है, जैसे- ओ, औ।

दंत्योष्ठ्य- जिनका उच्चारण दाँत और ओठों से होता है, जैसे- व।

स्पर्श व्यंजनों के पाँच वर्ग हैं और प्रत्येक वर्ग में पाँच-पाँच व्यंजन हैं।

प्रत्येक वर्ग का नाम पहले वर्ण के अनुसार रखा गया है, जैसे-

क- वर्ग- क, ख, ग, घ, ङ.।

च- वर्ग- च, छ, ज, झ, ञ।

ट- वर्ग- ट, ठ, ड, ढ, ण।

त- वर्ग- त, थ, द, ध, न।

प- वर्ग- प, फ, ब, भ, म।

तथा अन्त:स्थ- य र ल व

ऊष्म- श ष स ह